Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A III Sem - CC - 14

Philosophy of Religion - II

11 April
Week 17
Wednesday 20
110-255

"Concept of soul and liberation"

भारत का प्रायः प्रत्येक दार्शनिक 'चार्वाक' को छोड़कर 'आत्मा' की सत्ता में विश्वास करता है। 'आत्मा' में विश्वास करने के फलस्वरूप भारतीय दर्शन अध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ के दार्शनिकों ने साधारणतया आत्मा को अमर माना है। भारतीय दर्शन के समीक्षात्मक अध्ययन से आत्मा सम्बन्धी विचारों को मुख्यतः चार मतों में विभाजित किया जा सकता है —

1. भौतिकवादी मत (Materialistic View)
2. अनुभववादी मत (Emperical View)
3. यथार्थवादी मत (Realistic View)
4. आदर्शवादी मत (Idealistic View)

1. भौतिकवादी मत :— भारतीय दर्शन में आत्मा सम्बन्धी भौतिकवादी मत चार्वाक दर्शन की देन है। 'चार्वाक' आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानता है — चैतन्य शरीर ही आत्मा है। आत्मा शरीर है और शरीर आत्मा है। आत्मा और देह के बीच अभेद मानने के फलस्वरूप चार्वाक के आत्मा सम्बन्धी विचार को 'देहात्मवाद' (The theory of identity of soul and body) कहा जाता है। शरीर के नाश होने पर आत्मा भी नष्ट हो जाती है।

2. अनुभववादी मत — आत्मा के विषय में अनुभववादी विचार का समर्थक बौद्ध-दर्शन है। 'बुद्ध' ने 'आत्मा' को 'चेतना का प्रवाह' कहा है। अनुभववात

May 2011
M T W T F S S
30 31 1
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29

का साक्षी है कि – आत्मा का प्रतिपल परिवर्तन होता रहता है। बौद्धों का यह मत पाश्चात्य विचारक William James के मत से मिलता जुलता है। James ने भी आत्मा को चेतना का प्रवाह बतलाया है। इसे अनुभव केवल उस आत्मा का होता है जो सतत परिवर्तनशील है। इसे अपरिवर्तनशील, अजर, अमर बतलाना सर्वथा भ्रमपूर्ण है। बौद्धों के अनुसार अनुभवजन्य आत्मा ही वास्तविक है।

(c) यथार्थवादी मत :- यह मत न्याय वैशेषिकों के द्वारा प्रतिपादित हुआ है। इसके अनुसार आत्मा एक अचेतन द्रव्य है। इसमें चेतना आवश्यक गुण के रूप में नहीं रहती। चेतना आत्मा का आकस्मिक लक्षण है। जब आत्मा का सम्पर्क मन से, मन का सम्पर्क इन्द्रियों से और इन्द्रियों का सम्पर्क बाह्य पदार्थों से होता है तभी इसमें चैतन्य के गुण का उदय होता है। जब आत्मा को शरीर से छुटकारा मिल जाता है तो वह अचेतन हो जाता है।

न्याय-वैशेषिक दो प्रकार की आत्मा में विश्वास करते हैं। (a) जीवात्मा और (b) परमात्मा। (a) जीवात्मा सभी मनुष्यों और जीवों में रहती है और यह सापेक्ष, अनेक एवं ससीम है। इसके विपरीत (b) परमात्मा एक निरपेक्ष, असीम

एवं नित्य है। यह आत्मा कर्मफलों का भोग करती है, सुख और दुःख का भोक्ता आत्मा ही है। यह आत्मा ज्ञाता है। न्याय वैशेषिक की तरह मीमांसा भी चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक लक्षण मानती है। मीमांसा दर्शन में आत्मा को नित्य एवं विभु माना गया है।

आत्मा सम्बन्धी (4.) आदर्शवादी मत - इस विचार के समर्थक सांख्य, योग, शंकर और रामानुज हैं।

सांख्य, योग के अनुसार आत्मा चैतन्य स्वरूप है जिसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। वह अनादि और अनन्त है। इसके अनुसार आत्मा आनन्दमय नहीं कही जा सकती। यहीं सांख्य मत निश्चय ही वेदान्त मत से भिन्न हो जाता है।

'शंकर' - वेदान्त के अनुसार आत्मा और ब्रह्म दोनों एक ही सत्ता के दो नाम हैं। दोनों अभिन्न एवं एक ही हैं। अज्ञान के कारण आत्मा और ब्रह्म को भिन्न कहा जाता है। एक ही ब्रह्म या आत्मा अनेक जीवों में विविध रूपों में दिख पड़ता है।

शंकर ने आत्मा को सच्चिदानन्द माना है। यह आत्मा नित्य, अपरिवर्तनशील एवं अविनाशी है। शंकर का कहना है -
"ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या
जीवो ब्रह्मणो वा पर:।"

रामानुज के अनुसार जीवात्मा ब्रह्म का ही एक अंश है। यह आत्मा चेतन प्रकृत के साथ-साथ ही यथार्थ ज्ञाता भी है। रामानुज जीवात्मा के तीन प्रकार बतलाते हैं। 1. बद्ध जीव 2. मुक्त जीव और 3. नित्य जीव।

बद्ध जीव वे हैं जो अभी तक बन्धनग्रस्त हैं और सांसारिक जीवन समाप्त नहीं कर सकते हैं। वे जीव आवागमन के चक्कर में फंसे रहते हैं। मुक्त जीव कठोर यातनाओं को सहते हुए अहम संयम एवं अपने प्रयत्न के कारण अपने को मुक्त करने में समर्थ हो सके हैं। वे अपनी इच्छा के अनुकूल सभी लोकों में विचरण करते रहते हैं। नित्य जीव वे हैं जो सदा कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाते हैं। वे आवागमन के चक्कर से पूर्णतया छुटकारा पा लेते हैं। और इनका ज्ञान कभी क्षीण नहीं हो पाता।

इस प्रकार भारतीय दर्शन में आत्मा के बन्धन से उपर्युक्त चार प्रकार के मत मिलते हैं।

आत्मा संबंधी भारतीय दर्शन में विचार की व्याख्या इस प्रकार से की गई है:—

1. Veda:— वेद के विचारों का भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान है। वेद में आत्मा को

March 2011
M T W T F S S
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31

अस्तित्व की चर्चा की गई है। अतः उपनिषद् के अनुसार आत्मा स्वतः सिद्ध होता है, क्योंकि अस्तित्व को सिद्ध करने हेतु किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। वेद भी आत्मा की विशेषता का उल्लेख करते हैं एवं बतलाया गया है कि आत्मा पूर्ण चेतन स्वरूप प्रकाशमान तथा ज्ञान वाले भी को आलोकित करती है। आत्मा किसी भी वस्तु एवं जीव, मन, शरीर और इन्द्रियों से पूर्णतः भिन्न है। मनुष्य को इसकी वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है अर्थात् हमारी अज्ञानता का नाश होता है क्योंकि हम आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

2. Upnishad:- उपनिषद में वर्णित आत्मा का विचार पूर्णतः स्पष्ट है। यहाँ आत्मा और ब्रह्म दोनों को समान माना गया है। आत्मा को पाप, मृत्यु, शोक, इच्छा आदि से मुक्त माना गया है क्योंकि आत्मा कि जो सभी परिवर्तनों के अन्तर्गत समान रूप से विद्यमान है, इसे कोई नष्ट नहीं कर सकता है। स्थिरता, तारतम्यता, एकता, एवं नित्य, क्रियाशील, इसके विभिन्न लक्षण हैं। आत्मा अपने में पूर्ण लोक है। यह उस समय भी विद्यमान रहती है जब जाग्रत और स्वप्नावस्था के अनुभव समाप्त

May						2011
M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

के लिए स्वागत सेवा मिलते रहते जाते हो। उपनिषद में कहा गया है कि जिस सागर प्रकाश पुंज से सूर्य और चन्द्रमा आते ही जाते हैं और आगमन वैसा ही जाती है उसी प्रकार भी आत्मा प्रकाशवान रहती है।

गीता - गीता में आत्मा को सर्वोच्च सत्ता कहा गया है। गीता के अनुसार - ॥ आत्मा न कभी मरती है न जन्म लेती है। अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन। यह शरीर के नाश होने के साथ कभी नष्ट नहीं होती है। जिस प्रकार मनुष्य पुराने फटे कपड़े को त्यागकर नवीन वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार आत्मा वृद्ध और जरजर शरीर को त्यागकर नये शरीर धारण करती है।

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती। इसको जल नहीं गला सकता, और वायु नहीं सुखा सकता। क्योंकि यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी, अचल और सनातन है।

March 2011

M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			